आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024
Received: 10/09/2024; Accepted: 15/09/2024; Published: 26/09/2024

लेख

प्रेमचंद के कथा साहित्य में किसान

- **पद्मा मिश्रा**
जमशेदपुर
झारखंड

पद्मा मिश्रा,**प्रेमचंद के कथा साहित्य में किसान**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024,(245-249)

भारतीय साहित्य के सृजन,और रचनाधर्मिता के मूल लेखन में सर्वहारा वर्ग और समाज की नींव व् रीढ़ कहे जाने वाले किसान वर्ग पर सबसे ज्यादा लिखा गया ..क्योंकि किसान ग्राम देवता है ..,धरती का उपकार है …श्रृंगार है ..समाज को श्रम व् लगन ,त्याग और तपस्या का सर्वोत्तम पाठ पढ़ाने वाला गुरु भी है तो युग निर्माता भी . भारतेंदु से प्रारंभ हुए आधुनिक गद्य काल में भी अंग्रेजी शासन का शिकार नील की खेती करने वाले शोषित किसानो पर भी खूब लिखा गया भारतेंदु ने अपनी विश्व प्रसिद्द कृति "नील देवी "में 'निलहे किसानो की पीड़ा को ,,,उनकी गरीबी की विभीषिका को बखूबी दर्शाया है *.–भारतेंदु मंडल के लागभग सभी लेखकों ने

इस मार्मिक धरती पुत्रों की पीड़ा को अपने लेखन का विषय बनाया है

.इस सन्दर्भ में प्रेमचन्द जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है –वे धरती से जुड़ कर जीना

चाहते थे -खेतिहर किसानो श्रमिको का दर्द और संघर्ष उनकी चेतना को झकझोरता था ,

प्रेमचन्द जी ने अपने उपन्यास "गोदान "में किसान होरी के माध्यम से

उनकी पीड़ा को दर्द को ,मजबूरियों को और उनके अंतर्द्वन्द्ध का मार्मिक चित्रण किया है।

किसान पक्का स्वार्थी होता है, इसमें संदेह नहीं। उसकी गाँठ से रिश्वत के पैसे बड़ी मुश्किल से निकलते हैं, भाव-ताव में भी वह चौकस होता है, ब्याज की एक-एक पाई छुड़ाने के लिए वह महाजन की घंटों चिरौरी करता है, जब तक पक्का विश्वास न हो जाय, वह किसी के फुसलाने में नहीं आता, लेकिन उसका संपूर्ण जीवन प्रकृति से स्थायी सहयोग है। वृक्षों में फल लगते हैं, उन्हें जनता खाती है, खेती में अनाज होता है, वह संसार के काम आता है; गाय के थन में दूध होता है, वह खुद पीने नहीं जाती, दूसरे ही पीते हैं, मेघों से वर्षा होती है, उससे पृथ्वी तृप्त होती है। ऐसी संगति में कुत्सित स्वार्थ के लिए कहाँ स्थान? होरी किसान था और किसी के जलते हुए घर में हाथ सेंकना उसने सीखा ही न था।"

"होरी भारतीय कृषक ही नहीं बल्कि तत्कालीन समाज की विसंगतियो का जीता जगता प्रमाण बना उनका प्रतिनिधि ही था .जो अपनीपरिस्थितियों से जूझता हुआ समाज की ,पंडितों -ब्राह्मणों और साहूकारों की अनैतिक दुनिया कोचुनौती दे रहा था। प्रेमचन्द भी किसान वर्ग के प्रतिनिधि लेखक थे .जो उनकी व्यथा को -उनके श्रम व् त्याग की गाथा अपने उपन्यासों -कहानियों के माध्यम से समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे थे – "गोदान का होरी परिश्रमी तो है पर साहूकारों के छल को भी समझता है ,और उन्हें भी छोटी मोटी बातों पर धोखे में रखता, थाप्रेमचन्द लिखते हैं — " इस व्यवहार का वह आदी था। कृषक के जीवन का तो यह प्रसाद है। भोला के साथ वह छल कर रहा था और यह व्यापार उसकी मर्यादा के अनुकूल न था। अब भी लेन-देन में उसके लिए लिखा-पढ़ी होने और न होने में कोई अंतर न था। सूखे-बूड़े की विपदाएँ उसके मन को भीरु बनाए रहती थीं। ईश्वर का रुद्र रूप सदैव उसके सामने रहता था; पर यह छल उसकी नीति में छल न था। यह केवल स्वार्थ-सिद्धि थी और यह कोई बुरी बात न थी।*सामने कसमें खा जाता था कि एक पाई भी नहीं * इस तरह का छल तो वह दिन-रात करता रहता था। घर में दो-चार रुपए पड़े, रहने पर भी महाजन के है। "

अपने कहानी 'कफन में भी उन्होंने गरीब खेतिहर, किसानो के दुःख दर्द को ही अभिव्यक्त किया है, कहानी में तत्कालीन समय -वातावरण और परिस्थितियों को आधार बनाया है जब खेतिहर किसान की जीवन दशा और दूभर हो गई थी श्रम, व् शोषण की चक्की में पिसते गरीब किसानो – मजदूरों पर दोहरी मारपड़ रही थी , प्रेमचन्द जी इस बात से विचलित हो स्वयम कहते हैं – "उन किसानो की दशा तो मजदूरों से भी बदतर थी वे विवश थे –उनसे ये कामचोर घिसु -माधव कुछ कम नहीं थे — खेतिहर को जी तोड़ मेहनत करने के बावजूद -सिंचाई वगैरह करने बाद भी –लागत भी मुश्किल से मिलती थी ,कभी कभी लगान के लिए भी कुछ नहीं बचता ...ऐसी दशा में किसान बनने से क्या फायदा खेती से क्या फायदा ? काम करने के बावजूद जब पेट ही नहीं

भरता –तो ये दोनों तो भूखे रह कर ही — काम नहीं करते। रंगभूमि में भी प्रेमचन्द ने इस संघर्ष भरी जिन्दगी को अपने की आँखों से भरपूर महसूस किया है , जॉन सेवक-कच्चा माल पैदा करना तुम्हारा काम होगा।किसान को ऊख या जौ-गेहूँ से कोई प्रेम नहीं होता। वह जिस जिन्स के पैदा करने में अपना लाभ देखेगा वही पैदा करेगा। इसकी कोई चिंता नहीं है। खाँ साहब, आप उस पण्डे को मेरे पास कल जरूर भेज दी जिएगा।

रंगभूमि *पूस की एक रात* "कहानी प्रेमचन्द जी की प्रतिनिधि कहानियों में से एक है, ...मुन्नी और उसके पति हल्कू को वह एक रात वर्ष भर लम्बी प्रतीत होती है – जाड़े की हाड कंपाती रात में जब खेतकी रखवाली के लिए हल्कू को सोना पड़ता है तब वह उसकी ठिठुरन – शीतलता को सहन नहीं कर पाता और आग जल कर सो जाता है .

भले ही जानवर आकर उसका खेत चर जाते हैं . जबरा भूँकता रहता है

पर उसकी नींद नहीं टूटी — एक किसान के जीवन की त्रासदी जिजीविषा की हजारों कहानियों को जन्म दे जाती है – उस समय उसे साहूकारका कर्ज नहीं याद आता .. कम्बल खरीदने कीबात वह भूल जाता है ., और नील गाएं उसका खेत चर जाती है।

यहीप्रेम चंद की सम्वेदना है उन जमींन से जुड़े लोगों के साथ ..... प्रेमचंद के समकालीन प्रायः सभी लेखकों, कवियों ने सर्वहारा वर्ग , किसानो , एवं श्रमजीवी वर्ग के शोषण ,उनके सामाजिक और जातीय संघर्ष, सामन्तवाद ,गरीबी व् सामाजिक विषमताओं को ही अपनी रचना का विषय नहीं बनाया है ,बल्कि उनके जीवन में आये हर्ष उल्लास के क्षणों में ,..आकाश में छाये काले काले मेघों को देखकर जिस तरह मन मयूर नाच उठते हैं —किसान का मन भी झूम उठता है ।

उनके कथा साहित्य में किसानो की इसी मनोदशा का सुंदर चित्रण मिलता है, ग्रामीण परिवेश ,खेत खलिहान निरानी ,रोपनी , कटौनी के दृश्यों की भरमार है ,या यों कहें भारतीय जनमानस की चेतना से कृषक वर्ग को कभी अलग नहीं किया जा सकताप्रकृति के सुंदर रूप हों या भयंकर ,गरीबी की विभीषिका हो या जीवन के सत्य शिव सुंदर रूप को दर्शाते हर्ष -उल्लास के पल हों — किसान झूम कर नाचता है — गाता है अपनी मनोभावनाओं को व्यक्त करता है –वह समाज की भूख मिटाता है पर स्वयम भूखा रह कर धरती की हरियाली को जीवंत रखता है .यही कारण है कि समाज का दर्पण कहे जाने वाले भारतीय साहित्यकी मुलभुत कल्पना संवेदना और मानवीय अनुभूतियों की व्यापकता से धरतीपुत्र कभी अलग नहीं हो पाया है ।

प्रेमचन्द की कहानियां हमारे आसपास और दैनंदिन जीवन की हर छोटी-बड़ी घटनाओं से प्रेरित होती है।उनको पढ़ते समय यही प्रतीत होता है जैसे यह घटना हमारी आंखों के सामने घटित हो रही है अथवा हमारे परिवेश से

ही जुड़ी हुई है। विशेष रूप से बाल मनोविज्ञान से जुड़ी कहानियां,अपनी संवेदना, मार्मिकता, और भावनात्मक चित्रण में अपूर्व होती है और मन को उद्वेलित कर जाती है। इन्हीं कालजयी कहानियों में ईदगाह कहानी मुझे बेहद पसंद हैं, जहां बच्चों की दुनिया, उनके सपने,उनकी कल्पनाएं सजीव हो साकार रुप ले लेती है,,ईद पर जुड़ने वाले मेले का मनोहारी वर्णन हो या नन्हें हामिद का अंतर्द्वंद्व,मन को छू जाता है।

बाल मनोविज्ञान पर आधारित 'मुंशी प्रेमचंद' द्वारा लिखी गई "ईदगाह" कहानी एक अप्रतिम कहानी है जो बाल मन को गहनता से दर्शाती है। इस कहानी को पढ़कर ज्ञात होता है कि परिस्थितियां उम्र नहीं देखती और एक छोटा सा बालक भी विषम परिस्थितियों में समय से पहले परिपक्व हो जाता है,,कहानी में हामिद, जो एक मात्र 8 वर्ष का बालक है, वह एक परिपक्व व्यक्ति की भांति किसी तरह समझदारी का परिचय देता है, और अपने दोस्तों के द्वारा तरह तरह के खिलौने खरीदे जाने पर या चटपटी चीजें खाने का लालच देने पर विचलित तो होता है, पर मन पर संयम रखता है, और अनेक बहाने बना कर मन को समझा लेता है, प्रेमचंद ने इसी बात को रोचकता से दर्शाया है,, कहानी का मुख्य पात्र हामिद और उसकी दादी अमीना है,हामिद के माता-पिता इस संसार में नही हैं। वो अपनी बूढ़ी दादी के साथ रहता है,, वे बहुत गरीब हैं, उसकी दादी छोटा-मोटा काम करके किसी तरह अपना और हामिद का भरण पोषण करती है,, वो हामिद की सारी इच्छाएं पूरी नहीं कर पाती,,ईद का त्यौहार आता है, सब लोग मेले में घूमने जा रहे हैं,हामिद भी मेले में जाने के लिए उत्साहित है,,हामिद की दादी किसी तरह थोड़े बहुत पैसे जोड़कर तीन आने हामिद को देती है, ताकि वो मेला घूम आये,, बूढ़ी दादी को लगता है कि बेचारे हामिद के दोस्त मेले में मज़े करेंगे तो वह तरसेगा,वह अपनी मेहनत के सारे पैसे हामिद को दे देती है, हामिद अन्य बच्चों के साथ मेला जाता है,,यहां सब बच्चे अपने मां-बाप द्वारा दिए पैसों से खिलौने, मिठाई आदि खरीदते है, लेकिन वह अपने मन पर नियंत्रण कर ये सब नही खरीदता। वह मेले में एक जरूरी चीज लेता है,, वह जरूरी चीज है रसोई घर में काम आने वाला चिमटा,!!हामिद देखता था कि कैसे उसकी दादी के हाथ रोटी बनाते समय जल जाते थे, क्योंकि उसके पास चिमटा नहीं था, हामिद को अपनी बूढ़ी दादी का यह कष्ट बराबर याद रहा, और उसने अपनी इच्छाओं को तिलांजलि देते हुए अपनी बूढ़ी दादी के लिए एक उपयोगी वस्तु खरीदी.,वह खिलौने के आगे हारा नहीं, गाने पीने की चीजें देखकर ललचाया नहीं,बस केवल एक चीज याद रही,वह था कि दादी की उंगलियां जल जाती है, उसकी पीड़ा और दर्द को उस छोटे से बच्चे ने महसूस किया, और चिमटा खरीद लिया, और उसे बंदूक की तरह कंधे पर उठाकर बड़ी शान के साथ चल रहा था, उसकी कल्पना में वह चिमटा कभी बंदूक बन जाता कभी सिपाही जी का डंडा,तो कभी संगीत का साथी,, फिर दादी के लिए चिमटा तो था ही,,बस फिर क्या था, पांसा ही पलट गया,अब सारे दोस्तों को अपने खिलौने हामिद के चिमटे के आगे फीके लगने लगे,सब उसे छू छूकर देखना चाहते थे,, कहानी का अंत बेहद मार्मिक और

भावविभोर कर देता है,जब बूढ़ी अमीना पहले तो चिमटा देखकर नाराज होती है, फिर जार जार रोती हुई हामिद को गले लगा लेती है, यहां बूढी दादी हामिद बन गई थी और नन्हा हामिद अमीना,जो उसे चुप करा रहा था,यह है एक संवेदनशील कथाकार की जादूगरी,कलम के सिपाही की अभिव्यक्ति जो पाठक के मन के भीतर प्रवेश कर सकती हैं,,

यह कहानी हामिद की मात्र 8 वर्ष की आयु में परिपक्वता को दर्शाती है, उसके अंदर की संवेदनशीलता को दर्शाती है. इसका कारण यह था कि समय और निर्धनता ने हामिद को अपनी उम्र के बच्चों से ज्यादा समझदार बना दिया था, वो समय से पहले ही परिपक्व हो चुका था, संवेदनशील बन चुका था.

हामिद के रूप में एक बच्चे के मन को भली-भांति पढ़ने और बाल मनोविज्ञान की संवेदनशीलता को सार्थक रूप से प्रस्तुत करने में लेखक प्रेमचंद पूरी तरह सफल रहे हैं।

अतः भारतीय उपन्यासों में कृषक वर्ग अनुभूतियों .जन जागरण ,बौद्धिक चेतना औरअपने अधिकारों के लिए संघर्ष ,विरोध और विप्लव के स्वरों में मुखरित हुआ है।--वह जन का प्रतीक है ,वह राष्ट्र का मुखर संगीत है --गौरव है --साहित्य में

प्राण बन सदैव मुखरित रहे --यही कामना है ..।

****